Peer Reviewed Refereed Journal ISSN : 2278 – 5639
Global Online Electronic International Interdisciplinary Research Journal (GOEIIRJ)
{Bi-Monthly} Volume – XIII Issue – IV July – August 2024

मुक्तिबोध की कविता में सामाजिक चेतना

डॉ. दत्तात्रय फुके
सहयोगी प्राध्यापक एवं हिंदी विभागाध्यक्ष
राजर्षी शाहू महाविद्यालय, पाथ्री तहसील फुलंब्री
जिला छत्रपति संभाजीनगर. महाराष्ट्र

शोध सार

मुक्तिबोध की कविताओं में सामाजिक चेतना की अभिव्यक्ति गहराई और व्यापकता से होती है, जो उन्हें हिंदी साहित्य के अन्य कवियों से अलग पहचान दिलाती है। उनकी कविताएँ समाज में व्याप्त शोषण, अन्याय, और असमानता के खिलाफ एक तीव्र प्रतिरोध के रूप में सामने आती हैं। मुक्तिबोध का साहित्य न केवल व्यक्ति के आंतरिक संघर्षों को उजागर करता है, बल्कि वह समाज की जटिलताओं और विडंबनाओं को भी स्पष्ट रूप से दर्शाता है। उनकी कविताओं में वर्ग संघर्ष, शोषण, और सत्ता के दमनकारी स्वरूपों की गहरी समझ झलकती है, जो समाज में परिवर्तन और जागरूकता लाने का प्रयास करती है। मुक्तिबोध के लिए कविता मात्र सौंदर्य की अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि सामाजिक और राजनीतिक चेतना का माध्यम है, जो पाठकों को समाज की वास्तविकताओं से रूबरू कराती है और उन्हें सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रेरित करती है।

Global Online Electronic International Interdicipilinary Research Journal's licensed Based on a work at *http://www.goeiirj.com*

मुख्य शब्द : मुक्तिबोध काव्य, सामाजिक चेतना, राजनीतिक चेतना

प्रस्तावना

मुक्तिबोध (गजानन माधव मुक्तिबोध) हिंदी साहित्य के महत्वपूर्ण कवि और विचारक थे, जिनका लेखन भारतीय समाज की जटिलताओं और उसमें व्याप्त सामाजिक असमानताओं पर गहरी दृष्टि डालता है। उनकी कविताओं में सामाजिक चेतना की प्रमुखता है, जो उनके साहित्य को अन्यों से विशिष्ट बनाती है।

मुक्तिबोध की कविताओं में सामाजिक चेतना की बात करने से पहले यह समझना आवश्यक है कि उनका साहित्यिक जीवन और उनकी कविता कैसे समाज से गहराई से जुड़ी हुई है। उनका लेखन काल (मुख्यतः 1940 से 1960 के दशक के बीच) एक ऐसा दौर था जब भारत

स्वतंत्रता की ओर अग्रसर हो रहा था और समाज में तीव्र परिवर्तन हो रहे थे। यह वह समय था जब भारत को औपनिवेशिक शासन से मुक्ति की ओर ले जाने की कोशिशें हो रही थीं, लेकिन साथ ही समाज के अंदर व्याप्त जाति, वर्ग, और लैंगिक भेदभाव जैसी समस्याएं भी विद्यमान थीं।

मुक्तिबोध की कविताओं का अध्ययन करने पर यह स्पष्ट होता है कि वे सिर्फ़ अपनी व्यक्तिगत भावनाओं का चित्रण नहीं कर रहे थे, बल्कि उनके माध्यम से समाज की समस्याओं को भी प्रकट कर रहे थे। उनकी कविताएँ एक प्रकार का प्रतिरोध हैं दृ उस व्यवस्था के खिलाफ, जो समाज में असमानता और शोषण को बढ़ावा देती है।

मुक्तिबोध की कविता में सामाजिक चेतना की अभिव्यक्ति

मुक्तिबोध की कविताओं में सामाजिक चेतना की अभिव्यक्ति कई स्तरों पर होती है। वे अपने पाठकों को समाज की विडंबनाओं से रूबरू कराते हैं और यह दिखाते हैं कि किस प्रकार एक व्यक्ति समाज की जटिलताओं के बीच संघर्ष करता है। उनके साहित्य में आत्मसंघर्ष और सामाजिक संघर्ष दोनों का मिश्रण मिलता है।

वर्ग संघर्ष की चेतना मुक्तिबोध की कविताओं में वर्ग संघर्ष की चेतना स्पष्ट रूप से देखने को मिलती है। उनकी कविताएँ समाज में व्याप्त वर्गीय भेदभाव और आर्थिक असमानता की तरफ़ इशारा करती हैं। उदाहरण के तौर पर, उनकी प्रसिद्ध कविता अंधेरे में वर्ग संघर्ष का चित्रण अत्यंत गहनता से किया गया है। यह कविता एक व्यक्ति के मानसिक संघर्ष को दर्शाती है, जो समाज के अंदर व्याप्त शोषण और अत्याचार के खिलाफ उठने की कोशिश कर रहा है। ष्अंधेरे मेंष कविता समाज में व्याप्त अमीर–गरीब के बीच की खाई, शोषक और शोषित के बीच के अंतर, और सत्ता के केंद्र में बैठे लोगों की संवेदनहीनता को उजागर करती है।

शोषण के खिलाफ प्रतिरोध :

मुक्तिबोध की कविताओं में शोषण के खिलाफ प्रतिरोध की भावना भी प्रमुखता से प्रकट होती है। वे यह दिखाते हैं कि किस प्रकार समाज में सत्ता के केंद्र में बैठे लोग अपने स्वार्थ के लिए दूसरों का शोषण करते हैं और इसे वैध ठहराने के लिए विभिन्न तरीकों का सहारा लेते हैं। मुक्तिबोध इस शोषण के खिलाफ आवाज उठाते हैं और अपने पाठकों को भी जागरूक करने का प्रयास करते हैं।

व्यक्तिवादी चेतना और समाज :

मुक्तिबोध के साहित्य में व्यक्तिवादी चेतना भी महत्वपूर्ण है, लेकिन वह समाज से अलग नहीं है। उनका यह मानना था कि व्यक्ति का आत्मसंघर्ष भी समाज से ही जुड़ा हुआ है। उनके अनुसार, जब तक व्यक्ति अपने समाज की समस्याओं को नहीं समझता, तब तक उसका

आत्मसंघर्ष अधूरा है। यह चेतना उनकी कविताओं में बार–बार प्रकट होती है, जहां व्यक्ति अपने भीतर की उथल–पुथल को समाज के संदर्भ में समझने की कोशिश करता है।

राजनीतिक चेतना :

मुक्तिबोध की कविताओं में राजनीतिक चेतना भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। वे समाज में हो रहे राजनीतिक परिवर्तनों को गहराई से देखते हैं और उन्हें अपने साहित्य में प्रकट करते हैं। उनकी कविताओं में साम्राज्यवाद, सामंतवाद, और पूंजीवाद के खिलाफ विरोध की भावना स्पष्ट दिखाई देती है। वे यह दिखाते हैं कि किस प्रकार राजनीति का समाज पर प्रभाव पड़ता है और किस प्रकार यह शोषण और असमानता को बढ़ावा देता है।

मुक्तिबोध की प्रमुख कविताओं में सामाजिक चेतना

अब हम मुक्तिबोध की कुछ प्रमुख कविताओं का विश्लेषण करेंगे, जिनमें सामाजिक चेतना का महत्वपूर्ण स्थान है।

1. **अंधेरे में**

ज़िन्दगी के...
कमरों में अँधेरे
लगाता है चक्कर
कोई एक लगातार;
आवाज़ पैरों की देती है सुनाई
बार–बार....बार–बार,
वह नहीं दीखता... नहीं ही दीखता,
किन्तु वह रहा घूम
तिलस्मी खोह में गिरफ्तार कोई एक,
भीत–पार आती हुई पास से,
गहन रहस्यमय अन्धकार ध्वनि–सा
अस्तित्व जनाता
अनिवार कोई एक,
और मेरे हृदय की धक–धक
पूछती है––वह कौन
सुनाई जो देता, पर नहीं देता दिखाई !
इतने में अकस्मात गिरते हैं भीतर से

फूले हुए पलस्तर,
खिरती है चूने–भरी रेत
खिसकती हैं पपड़ियाँ इस तरह––
खुद–ब–खुद
कोई बड़ा चेहरा बन जाता है,
स्वयमपि
मुख बन जाता है दिवाल पर,
नुकीली नाक और
भव्य ललाट है,
दृढ़ हनु
कोई अनजानी अन–पहचानी आकृति।
कौन वह दिखाई जो देता, पर
नहीं जाना जाता है !!
कौन मनु ?
बाहर शहर के, पहाड़ी के उस पार, तालाब...
अँधेरा सब ओर,
निस्तब्ध जल,
पर, भीतर से उभरती है सहसा
सलिल के तम–श्याम शीशे में कोई श्वेत आकृति
कुहरीला कोई बड़ा चेहरा फैल जाता है
और मुसकाता है,
पहचान बताता है,
किन्तु, मैं हतप्रभ,
नहीं वह समझ में आता।
अरे ! अरे !!
तालाब के आस–पास अँधेरे में वन–वृक्ष
चमक–चमक उठते हैं हरे–हरे अचानक
वृक्षों के शीशे पर नाच–नाच उठती हैं बिजलियाँ,
शाखाएँ, डालियाँ झूमकर झपटकर

चीख़, एक दूसरे पर पटकती हैं सिर कि अकस्मात्––
वृक्षों के अँधेरे में छिपी हुई किसी एक
तिलस्मी खोह का शिला–द्वार
खुलता है धड़ से
.....
घुसती है लाल–लाल मशाल अजीब–सी
अन्तराल–विवर के तम में
लाल–लाल कुहरा,
कुहरे में, सामने, रक्तालोक–स्नात पुरुष एक,
रहस्य साक्षात् !!
तेजो प्रभामय उसका ललाट देख
मेरे अंग–अंग में अजीब एक थरथर
गौरवर्ण, दीप्त–दृग, सौम्य–मुख
सम्भावित स्नेह–सा प्रिय–रूप देखकर
विलक्षण शंका,
भव्य आजानुभुज देखते ही साक्षात
गहन एक संदेह।
वह रहस्यमय व्यक्ति
अब तक न पायी गयी मेरी अभिव्यक्ति है
पूर्ण अवस्था वह
निज–सम्भावनाओं, निहित प्रभावों, प्रतिमाओं की,
मेरे परिपूर्ण का आविर्भाव,
हृदय में रिस रहे ज्ञान का तनाव वह,
आत्मा की प्रतिमा।
प्रश्न थे गम्भीर, शायद ख़तरनाक भी,
इसी लिए बाहर के गुंजान
जंगलों से आती हुई हवा ने
फूँक मार एकाएक मशाल ही बुझा दी–
कि मुझको यों अँधेरे में पकड़कर

मौत की सज़ा दी !
किसी काले डैश की घनी काली पट्टी ही
आँखों में बँध गयी,
किसी खड़ी पाई की सूली पर मैं टाँग दिया गया,
किसी शून्य बिन्दु के अँधियारे खड्डे में
गिरा दिया गया मैं
अचेतन स्थिति में !

मुक्तिबोध की कविता "अंधेरे में" उनकी सबसे चर्चित और महत्वपूर्ण रचनाओं में से एक है। यह कविता सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों का गहन विश्लेषण करती है और व्यक्ति के भीतर चल रहे संघर्ष को समाज के संदर्भ में प्रस्तुत करती है। इस कविता में अंधकार का प्रतीकात्मक अर्थ है – यह अंधकार समाज में व्याप्त शोषण, अन्याय, और असमानता का प्रतीक है।

कविता की शुरुआत ही एक डरावने और धुंधले वातावरण से होती है, जो समाज की वास्तविक स्थिति को प्रतिबिंबित करता है। यहाँ व्यक्ति अपने आप से संघर्ष कर रहा है, और यह संघर्ष केवल उसकी निजी लड़ाई नहीं है, बल्कि यह समाज के खिलाफ भी है। कविता में वर्णित भय, संदेह, और संघर्ष इस बात का प्रतीक है कि व्यक्ति समाज में व्याप्त शोषण और अन्याय के खिलाफ किस प्रकार जूझ रहा है।

2. ब्रह्मराक्षस

"ब्रह्मराक्षस" कविता भी मुक्तिबोध की महत्वपूर्ण रचनाओं में से एक है, जिसमें सामाजिक चेतना की झलक मिलती है। इस कविता में ब्रह्मराक्षस एक प्रतीक के रूप में आता है, जो समाज के उच्च वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। यह वर्ग समाज के शोषण में लिप्त है, और उसकी संवेदनहीनता को इस कविता में चित्रित किया गया है। ब्रह्मराक्षस अपनी सत्ता और ताकत का उपयोग समाज के निम्न वर्ग का शोषण करने के लिए करता है।

मुक्तिबोध ने इस कविता के माध्यम से यह दिखाया है कि समाज में सत्ता के केंद्र में बैठे लोग किस प्रकार शोषण और अन्याय के प्रतीक बन गए हैं। उनकी संवेदनहीनता और क्रूरता का चित्रण इस कविता में बहुत गहराई से किया गया है।

3. भूल–ग़लती

"भूल–ग़लती" कविता में मुक्तिबोध ने समाज में व्याप्त असमानताओं और भेदभाव को प्रकट किया है। यह कविता समाज के विभिन्न वर्गों के बीच के अंतर को दिखाती है और यह बताती है

कि कैसे यह असमानताएं समाज में विभाजन और संघर्ष को जन्म देती हैं। कविता में व्यक्त किया गया आत्मसंघर्ष भी इस बात का प्रतीक है कि व्यक्ति समाज की जटिलताओं के बीच अपनी पहचान खोजने की कोशिश कर रहा है।

सामाजिक चेतना और मुक्तिबोध की विचारधारा

मुक्तिबोध की कविता में सामाजिक चेतना उनके गहरे विचारधारात्मक दृष्टिकोण का परिणाम है। उनका साहित्य मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित था, जो समाज में वर्ग संघर्ष और शोषण की बात करता है। मुक्तिबोध ने इस विचारधारा को अपने साहित्य में बखूबी प्रस्तुत किया है। उनके लिए साहित्य समाज का प्रतिबिंब होना चाहिए और उसे समाज की वास्तविकताओं को उजागर करना चाहिए।

मुक्तिबोध ने अपने साहित्य के माध्यम से यह दिखाने का प्रयास किया कि समाज में शोषण और अन्याय कैसे व्याप्त हैं और इसे कैसे समाप्त किया जा सकता है। उनका मानना था कि साहित्य का काम केवल मनोरंजन नहीं है, बल्कि उसे समाज में परिवर्तन लाने का प्रयास भी करना चाहिए।

उनकी कविताओं में सामाजिक चेतना का प्रमुख स्थान है, क्योंकि उन्होंने समाज को एक ऐसे दृष्टिकोण से देखा जो सिर्फ सतही नहीं था। वे समाज की गहराई में जाकर उसकी जटिलताओं को समझते थे और उन्हें अपने साहित्य के माध्यम से प्रकट करते थे।

''गन्ध से सुकोमल मेघों में डूबकर
प्रत्येक वृक्ष से करता हूँ पहचान
प्रत्येक पुष्प से पूछता हूँ हाल–चाल
प्रत्येक लता से करता हूँ सम्पर्क''

कहने की आवश्यकता नहीं है कि मुक्तिबोध जन–मन के कवि हैं। जो जन–मन की वेदना को भी भली–भांति जानते पहचानते, परखते हैं। इसलिए इनके काव्य में संवेदना यत्र–तत्र–सर्वत्र दिखाई देती है। इसी क्रम में ये कहें कि यह संवेदना का काव्य है तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी परन्तु इनकी काव्य संवेदना पर विचार करने से पहले 'संवेदना' का अर्थ जानना नितान्त आवश्यक है।

निष्कर्ष

मुक्तिबोध की कविताओं में सामाजिक चेतना का चित्रण गहराई से हुआ है। उनकी रचनाएँ समाज के भीतर चल रहे संघर्षों, शोषण, और असमानताओं को उजागर करती हैं। उनके साहित्य में आत्मसंघर्ष और सामाजिक संघर्ष का जो मिश्रण मिलता है, वह उन्हें एक विशिष्ट स्थान देता

है। मुक्तिबोध का साहित्य सिर्फ उनकी व्यक्तिगत अनुभूतियों का संग्रह नहीं है, बल्कि वह समाज के प्रति उनकी गहरी संवेदनशीलता और उनके विचारधारात्मक दृष्टिकोण का भी प्रमाण है।

मुक्तिबोध की कविताएँ आज भी प्रासंगिक हैं, क्योंकि वे समाज की उन समस्याओं की तरफ इशारा करती हैं, जो आज भी विद्यमान हैं। उनकी कविताओं में व्यक्त सामाजिक चेतना आज के समाज के लिए एक प्रेरणा स्रोत हो सकती है, क्योंकि यह हमें समाज की वास्तविकताओं से रूबरू कराती है और हमें उन समस्याओं के प्रति सचेत करती है, जिनसे हमें संघर्ष करना है।

इस प्रकार, मुक्तिबोध की कविता में सामाजिक चेतना का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है, और उनके साहित्य का अध्ययन हमें समाज की गहराई से समझने और उसे बेहतर बनाने की दिशा में प्रेरित करता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. मुक्तिबोध, चाँद का मुँह टेढ़ा हैं, पृ. 88
2. मुक्तिबोध, एक साहित्यिक की डायरी, पृ. 136
3. सम्पा. डॉ. नगेन्द्र, मानविकी पारिभाषिक कोश (साहित्य खण्ड) पृ. 234
4. अज्ञेय, हिन्दी साहित्यः एक आधुनिक परिदृश्य, पृ. 17
5. सम्पा. अज्ञेय, 'तारसप्तक' में संग्रहीत कविताएं, पृ. 56